2 दिसम्बर 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन

पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन

प्रातः 6.50 से 7.20 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 17 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

दिसम्बर (प्रथम), 2015 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

इन्द्रध्वज मंडल विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 18 से 25 नवम्बर 2015 तक इन्द्रध्वज मंडल विधान बहुत हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर सायंकाल तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा प्रवचनसार की 80 से 84वीं गाथा पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात:काल विधानोपरान्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा 'मध्यलोक के अकृत्रिम चैत्यालय' विषय पर विशेष कक्षा का आयोजन हुआ।

विधान के अवसर पर बीच-बीच में अनेक छंदों का अर्थ पण्डित शांतिकुमारजी पाटील एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा समझाया गया। कार्यक्रम में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों सहित अनेक साधर्मियों ने लाभ लिया।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता वीतराग-विज्ञान महिला मंडल टोडरमल स्मारक, श्रीमती कांता-सतीशजी सेठी महावीरनगर, श्रीमती विमलादेवी ताराचंदजी सोगानी, श्रीमती श्रीकांताबाई-पूनमचंदजी छाबड़ा, श्रीमती सुशीलादेवी-शांतिलालजी जैन थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना ने पण्डित गोमटेशजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर एवं महाविद्यालय के विद्यार्थियों के सहयोग से संपन्न कराये।

तृतीय मासिक गोष्ठी संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन महावीर परमागम मंदिर में मासिक गोष्ठी की श्रृंखला में दिनांक 1 नवम्बर को तृतीय मासिक गोष्ठी का आयोजन हुआ।

'सर्व समस्याओं का समाधान कारक : स्वाध्याय' विषय पर आयोजित इस गोष्ठी में विभिन्न वक्ताओं ने स्वाध्याय के महत्व को समझाते हुये स्वाध्याय के स्वरूप को बताया।

इस अवसर पर विवेकजी शास्त्री व अपूर्वजी शास्त्री ने प्रश्नोत्तर के माध्यम से रोचकता के साथ प्रस्तुत किया कि स्वाध्याय के माध्यम से जगत की सारी परेशानियाँ सुलझ सकती है।

गोष्ठी की अध्यक्षता महेन्द्रजी शास्त्री ने की। कार्यक्रम के सभापति पण्डित अनिलजी शास्त्री ने अपने वक्तव्य में बताया कि मुमुक्षु के लिये स्वाध्याय उसका ट्रेडमार्क होता है। गोष्ठी का संचालन सुमितजी शास्त्री ने तथा संयोजन विवेकजी शास्त्री ने किया।

- विवेक शास्त्री, भिण्ड

साधना का अभीष्ट

''पुण्य पाप मिल दोइ पायनि बेड़ी डारी।
तन कारागृह मांही मोहि दिये दुख भारी।।''

उक्त पंक्तियों में कवि भूधरदास ने तन को कारागृह माना है। एक दार्शनिक ने श्रीकृष्ण के विषय में लिखा था - लोग कहते हैं श्रीकृष्ण का जन्म जेल में हुआ। मैं कहता हूँ कि आत्मा के लिये यह शरीर जेल ही है। आत्मा ने शरीर धारण किया तो आत्मा को जेल हो गई।

शाश्वत सुख प्राप्ति की लालसा प्राणिमात्र की स्वाभाविक लालसा है और धर्म ही उस लालसा को पूर्ण करने में सक्षम है।

जिन साधना सर्वोत्कृष्ट साधना मानी जाती है। सद्गृहस्थ से लेकर आचार्य, मुनि इसी सर्वोत्कृष्ट साधना के पथिक हैं और लक्ष्य है-परम सुख की प्राप्ति।

साधना मार्ग में व्रत-नियम, संयम, त्याग सब पाथेय हैं। इनके माध्यम से ही परम वीतराग अवस्था की प्राप्ति सम्भव है।

वास्तविक जीवन जीने की कला का आविर्भाव बिना संयम-साधना के सम्भव नहीं हो पाता; इसीलिये आचार्यों ने अवस्था विशेष में सल्लेखना जैसी विधि का निरूपण किया है और दुर्भिक्ष, उपसर्ग और जर्जर होती काया तथा रोग के नि:प्रतिकार अवस्था में सल्लेखना को विधिपूर्वक धारण करने की प्रेरणा दी है। साधना का अन्तिम अभीष्ट भी समाधिपूर्वक मरण को ही कहा है।

मेरे समक्ष ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल** की **समाधिमरण या सल्लेखना** पुस्तक रखी है, जिसमें मनीषी विद्वान ने सल्लेखना का सटीक, सरल, सुगम भाषा में विवेचन किया है। यह हम जैसे अल्पज्ञान वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

- सतीश जैन, दिल्ली (आकाशवाणी)

सम्पादकीय –

संजू की मजबूरी

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

नम्र होते हुये सिद्धोमल बोले –''दाढी-मूँछों की कुछ न कहो, उनसे क्या फर्क पड़ता है। दाढी-मूँछें तो बकरे के भी निकल आती है, क्या उनसे वह बकरा समझदार हो जाता है ? अस्तु ! पर, यह तो बताओ महाभाग ! कि मैंने आज इससे कहा ही क्या है ? किसी की बिना सुने जो मन आये कहे ही जा रही हो। अरे ! मैंने संजू से आज तो कुछ कहा ही नहीं, पिछले एक सप्ताह से भी मेरा संजू से आमना-सामना नहीं हुआ। पता नहीं वह एक सप्ताह से क्यों मुझसे आँखें चुरा रहा है; मैं इधर तो वह उधर, मैं उधर तो वह इधर - दूर-दूर रह रहा है। फिर यह डाँटने-डपटने की बात आई कहाँ से ?

मैं उससे कुछ पूछना अवश्य चाहता था, पर उसका यह रुख देखकर मैंने जान-बूझकर बात नहीं की; क्योंकि मुझे अपने काम से ही फुरसत नहीं थी, अत: मैंने कोई भी बात छेड़ना ठीक नहीं समझा। आज तो मैंने इस मनहूस की सवेरे से सूरत भी नहीं देखी, फिर यह बात आई तो आई कहाँ से ? मैं तुमसे यह पूछना चाहता हूँ।''- जरा तेज स्वर में सिद्धोमल ने कहा।

झुंझलाते हुये सुधा ने कहा –''फिर मनहूस कहा, क्या यह डाँटना नहीं है?''

''अरे श्रीमतीजी ! पर, यह तो मैंने अभी कहा, इसके पहले क्या कहा ? जरा वह भी तो सुनूँ।''

''मैं कुछ नहीं जानती, यदि तुमने कुछ नहीं कहा तो फिर यह आज सवेरे से उदास क्यों है ? आज तो इसने खाना भी ढंग से नहीं खाया''- रुँधे गले से भर्राई हुई आवाज में सुधा ने कहा।

''मैं क्या जानूँ ? इसकी इससे पूछो, मैंने तो इससे अब कुछ कहना ही छोड़ दिया है, मुझे इस पर कितना गर्व था, इस कलयुग में मुझे तो केवल यही एक सतयुगी बालक नजर आता था। पर जबसे इसने स्कूल छोड़ा, तब से दिन-प्रतिदिन आवारा होता जा रहा है। आये दिन अड़ौसियों-पड़ौसियों की शिकायतें सुनते-सुनते मेरे तो कान ही पक गये हैं। मेरी तो इसने नाक ही कटा दी है। अब तो इससे कुछ कहने को मेरा मन ही नहीं होता।''- कहते-कहते सेठ सिद्धोमल भावुक हो उठे। हताश हुये दु:खी मन से वे कहे जा रहे थे और सुधा विस्मयभाव से सुने जा रही थी –''अरे संजू की अम्मा ! क्या करें इस मूरख का ? इतना बड़ा हो गया और आवारा बना फिरता है। अरे ! बनिये का बच्चा है, न पढ पाया तो न सही, कौनसी नौकरी करनी थी, अपना धन्धा-व्यापार ही देखता। मैं कब तक देखूँगा ? इतना बड़ा व्यापार और अकेली मेरी जान। क्या-क्या देखूँ ? तुम्हारे लाडले द्वारा घर का कामकाज देखना, मेरे काम में हाथ बंटाना, मेरा सहयोग करना तो एक तरफ रहा; मैं तो रोज-रोज उसके उलाहने सुनते-सुनते ही परेशान हो गया हूँ।

जहाँ देखो, वहाँ से उधार ले रखा है, जिसका लिया उसे वापिस देने का नाम नहीं, बाप जो बैठा है चुकानेवाला। झूठ अलग बोलता है, धोखाधड़ी ही धन्धा बना रखा है। घर की कितनी चोरी की है, यह तो तुम सोच भी नहीं सकतीं। जब आये दिन होती हुई चोरी से मैं परेशान हो गया तो मुझे एक-एक करके सभी नौकरों की छुट्टी करनी पड़ी है। अन्यथा चोरी के कलंक का टीका उन बेचारों के माथे पर मुफ्त में ही लग रहा था।''

यद्यपि सेठ सिद्धोमल जान रहे थे कि चोरी नौकर नहीं करते, उनका बेटा ही करता है, पर नौकरों पर आँच न आये एतदर्थ उन्हें हटाना आवश्यक हो गया था। नौकरों के हटाने के बाद भी जब घर में चोरी होना बन्द नहीं हुआ, तब तो हथेली पर रखे आंवले की तरह स्पष्ट हो ही गया कि चोरी और कोई नहीं करता, संजू ही करता है, पर पुत्रमोह में संजू की माँ ने कभी यह स्वीकार नहीं किया।

संजू की माँ की शह, मित्रों के दबाव और व्यसनों की बढती हुई मार से वह धीरे-धीरे इतना मुँहफट और उद्दण्ड हो गया था कि पिता के पूछने पर उसने स्पष्ट कह दिया - ''हाँ रुपये मैंने उठाये हैं, बोलो ! आपको इसमें कुछ कहना है ? जो कुछ कहना हो, कहो, दिल खोलकर कहो !''

संजू की इसप्रकार दु:साहसपूर्ण बातें सुनकर सेठ सिद्धोमल आग-बबूला हो गये। उन्होंने कहा –''अच्छा तो तू ही चोर है !''

''चोर ! कैसा चोर ? मैंने किसकी चोरी की है ? जो मैं चोर हूँ। मेरा माल है, मैंने अपने काम में लिया है, इसमें आपके पेट में दर्द क्यों होता है ? बाप का पैसा बेटा खर्च नहीं करेगा तो और कौन करेगा ? लाओ तिजोरी की चाबियाँ भी मुझे दे दो, वर्ना...।''

संजू का इसप्रकार उद्दण्डता भरा व्यवहार देखकर सिद्धोमल ने माथा ठोक लिया और अचानक सीने में दर्द हो जाने से सीने को जोर से दबाते हुये वहीं बैठ गये ?

उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह कैसे हुआ ? और अब उन्हें क्या करना चाहिये ? सबसे पहले तो उन्होंने उसको सर्व अधिकारों से वंचित करने की कार्यवाही करते हुये दैनिक पेपर में यह सूचना निकलवा दी कि –''आज से संजू का मेरी सम्पत्ति पर

कोई अधिकार नहीं है। अत: जो भी इसको आर्थिक सहयोग करेगा, उसकी जिम्मेदारी मेरी नहीं होगी'' और पत्नी के लाख समझाने पर भी माँ की ममता की परवाह न करते हुये संजू से हमेशा के लिये सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। तब से संजू आवारा बना दर-दर की ठोकरें खाते हुये समाज और राष्ट्र का कोढ (कलंक) बनकर रह गया।''

यही सब रोना रोते हुये सिद्धोमल ने पत्नी से कहा -''सुना है उन अन्नू-अज्जू की गरीब पत्नियाँ अलग घाट-घाट पर इसके नाम को रोया करती हैं। अन्नू-अज्जू सीधे-सादे गरीब आदमी हैं, दैनिक मजदूरी करके अपना एवं अपने परिवार का भरण-पोषण कर रहे थे, इसने उन्हें भी मदिरा पिला-पिला कर बर्बाद कर दिया है। एक बात होवे तो बताऊँ, क्या-क्या कहूँ इसकी करतूतें ?''

बात पूरी ही नहीं हो पायी थी कि बीच में ही पुत्र व्यामोह में पड़ी सुधा ने कहा -''संजू के पापा ! तुम्हें तो केवल एक संजू की ही सब गलतियाँ दिखती हैं। बेचारा वह अभी क्या जाने इन बातों में ? ये औरतें छिनारें ही ऐसी होती हैं, जो खुद तो दूसरों पर डोरे डालतीं हैं और बदनाम करती हैं बेचारे बच्चों को ! तुम क्या जानो तिरिया-चरित्तर ? खैर, और तो सब ठीक; पर तुम उस पर कभी हाथ मत उठाना।''

''अरे सुधा ! मैं क्या पागल हूँ, तूने कभी देखा है उस पर हाथ उठाते ? हाँ, डाँटता-फटकारता तो मैं अवश्य हूँ, पर पीटना तो मैंने पिछले पाँच बरस से छोड़ दिया है। इतना तो मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ कि जब बाप का जूता बेटे के पैर में आने लगे तब से बेटों पर हाथ नहीं उठाना चाहिये।

देखो ! तुम्हारे सामने कैसा भोला बना नीची गर्दन किये बैठा है। तुम्हें मालूम है यह तुम्हारे पास आज क्यों आया है और ऐसा रूठा-रूठा उदास-सा क्यों बैठा है ?''

सुधा ने अत्यन्त दु:ख के साथ कहा -''प्राणनाथ ! मुझे यह कुछ मालूम नहीं था, मैं व्यर्थ ही तुम पर इतनी झल्ला रही थी।''

''तो सुनो, मैंने अब इसके सब तरफ से पंख काट दिये हैं, मैंने बाजार में सबसे साफ-साफ कह दिया, इसे कोई उधार न दे, वर्ना मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।''

बस, अब जब इसे तुम्हारे सिवाय और कहीं शरण नहीं दिखी, तब यह तुम्हारे पास आया है।

माँ की तो कुछ ममता ही ऐसी होती है कि वह सब कुछ जानकर भी अनजान बन जाती है। पापा के चले जाने पर संजू ने अपनी मजबूरी का बयान करते हुए कहा -''माँ ! इसमें मेरा क्या अपराध है ? स्कूल में मास्टरों ने मुझे पढने ही नहीं दिया, दिनभर अपने घर का काम कराते, बच्चों को खिलवाते, काम नहीं बनता तो कामचोर कहकर मारते-पीटते और पापा से शिकायत करने की धमकी देते। इधर पापा उनके विरुद्ध कुछ सुनने को तैयार नहीं थे, अत: मुझे मजबूर होकर स्कूल छोड़ना पड़ा।

तुम जानती ही हो कि पापा मुझे जब खर्च को कितना-सा पैसा देते ? सारे दोस्त मेरी मजाक उड़ाते। इसकारण मुझे उधार लेना पड़ा। वह डॉ. साहब का लड़का राजू है न ? वह मेरा दोस्त है और उसके पापा उसे मन चाहा खूब पैसा देते, उसके साथ रहते-रहते उसने पहले मुझे सिगरेट पीना सिखा दिया और बाद में उसके साथ रहने से धीरे-धीरे मुझे भी मदिरा पीने की आदत पड़ गई।

(क्रमश:)

श्री शिखरचंद ग्रंथभेंट योजना

श्री शिखरचंदजी जैन की स्मृति में सभी मंदिरों, स्वाध्याय मंडलों, ब्रह्मचारियों व मुमुक्षुओं के लिये जो भी दिगम्बर जैन साहित्य आवश्यक हो वह नि:शुल्क भेंट दिया जायेगा। ब्रह्मचारियों एवं मंदिरों हेतु यह योजना आजीवन उपलब्ध रहेगी। ग्रन्थप्राप्ति हेतु पोस्टकार्ड या मोबाइल से सूचना देवें। **संपर्क -** डॉ. दीपक जैन 'वैद्यरत्न', सी-115, सावित्री पथ, बापूनगर, जयपुर-302015 मोबाइल- 09352990108

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

(1) दिल्ली : यहाँ विश्वासनगर में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 18 से 25 नवम्बर तक 170 तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। अन्तिम दिन मंदिर की वर्षगांठ के अवसर पर जिनेन्द्र रथयात्रा का आयोजन हुआ, जिसमें सैंकड़ों साधर्मियों ने भाग लिया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली द्वारा संपन्न हुये।

(2) मुम्बई : यहाँ अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर विभिन्न उपनगरों में तत्त्वप्रचार हुआ, जिसके अन्तर्गत सीमंधर जिनालय में पण्डित जयकुमारजी जैन कोटा, मलाड (ईस्ट) में पण्डित अश्विनभाई शाह, भायंदर में पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, दादर में पण्डित मनीषजी जैन इन्दौर, मलाड (वेस्ट) में पण्डित विपिनजी जैन, बोरीवली में पण्डित जिनेश आर.शेठ एवं दहिसर में पण्डित अनिलजी शाह द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए – (इक्कीसवीं कड़ी, गतांक से आगे)

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा कि – ***यदि हमें आत्मा की अनादि–अनन्तता के बारे में संदेह है तो हम इस बारे में भी तो सुनिश्चित नहीं हैं कि आत्मा अनादि–अनंत नहीं है। तब हम गाफिल कैसे रह सकते हैं ?***

अब आगे पढिये –

मात्र क्षीणसी संभावनाओं के आधार पर हम कितने बड़े–बड़े निर्णय ले लेते हैं, कितने बड़े–बड़े कदम उठाते हैं, कितना शक्ति, श्रम, समय और धन का अपव्यय करते हैं, यह किसी से छुपा नहीं है। हमारे घर में आग लगने की संभावना लाखों में एक भी नहीं है।

दुनिया में कितने घर हैं और आज तक कितने घरों में आग लगी है?

रोज कितने घरों में आग लगती है ? तब भी हम फायर फाइटिंग का पूरा इंतजाम रखते ही हैं न ?

क्यों ?

क्योंकि यदि कभी आग लग गई तो क्या होगा ?

तब तो हम पूरी तरह से बर्बाद हो जायेंगे न ?

''कभी कदाचित ऐसा हो जाये तो ?''

बस इसी स्थिति से बचने के लिये हम जीवनभर आग बुझाने के साधनों को संभालकर रखते हैं, उन्हें उपयोग के लिये तैयार रखते हैं।

क्या आज तक किसी को यह अफसोस हुआ कि हमने इन साधनों पर कितना पैसा खर्च किया, इन्हें बनाये रखने में कितना कितना श्रम और समय बर्बाद किया, हमारे छोटे से घर का कितना बड़ा भाग इन साधनों से कई पीढियों से घेर रखा है, पर ये आज तक एक बार भी काम नहीं आये।

क्या अब भी कोई विचार करता है कि जब ये अब तक भी काम नहीं आये तो आगे भी क्या काम आयेंगे ? क्यों न इन्हें हम निकाल बाहर करें।

नहीं ! कभी नहीं !

कोई नहीं !

सभी यह चाहते हैं कि ये साधन कभी भी हमारे काम न आयें, तब भी सभी उन्हें अपने पास रखना अवश्य चाहते हैं।

क्यों ?

मात्र एक क्षीण सी संभावना के आधार पर ही न ?

क्या हमारे पास बहुत अधिक अतिरिक्त धन, समय या स्थान है कि उसे हम इस तरह बर्बाद करें ?

नहीं न ?

तब क्यों, यह सब किसलिये ?

क्योंकि वह अत्यन्त क्षीण सी संभावना भी है बड़ी विकराल !

यदि कभी यह हुआ तो हम कहीं के न रहेंगे।

क्या यही बात हमारे भगवान आत्मा के ऊपर लागू नहीं होती है ?

कितना बड़ा रिस्क है ?

क्या आपने कभी विचार किया कि –

''यदि यह आत्मा अनादि–अनंत है और हम इसका अनन्तकाल तक सुखी रहने का इंतजाम नहीं करते हैं, यदि हम इस जीवन से आगे का सोचते ही नहीं हैं तो हम कितने बड़े संकट में हैं ?

अपनी इस भूल का परिणाम कितना घातक होगा ?''

क्या हमें इस बारे में सोचना नहीं चाहिये ?

एक अत्यंत क्षीण सी संभावना पर, इसके इन्तजाम के लिये क्या कुछ नहीं किया जाना चाहिये ?

इसके लिये कौनसी कीमत महंगी है ?

क्या यह हमारी प्रथम प्राथमिकता का कर्तव्य नहीं है ?

मात्र अत्यंत क्षीण सी संभावनाओं के आधार पर हम क्या–क्या नहीं करते हैं ?

दुनियां में इंश्योरेन्स का व्यापार सबसे बड़ा व्यापार है और यह बिलकुल ही अनुत्पादक (nonproductive) है। दुनियां की बड़ी दौलत इसमें लगी हुई है पर इससे हमें मिलता क्या है ? इससे क्या पैदा होता है, क्या उत्पादन होता है ?

कुछ भी तो नहीं।

अरे इससे आप प्यास तक तो बुझा नहीं सकते हैं।

फिर यह सब किसलिये ?

मात्र क्षीण–सी संभावनाओं से बचने के लिये ही तो न ?

हमने कितनी विनाशक सामग्री तैयार कर ली है – परमाणु बम और मिसाइल। और फिर इन सबसे बचने के साधन भी।

यह सब किसलिये ?

मात्र शत्रु से खतरे की संभावना से बचने के लिये ही न ?

हम उतनी दवाइयाँ बीमारी ठीक करने के लिये नहीं खाते हैं जितनी दवाइयाँ हम इसलिये खाते हैं कि हम कभी बीमार हों ही नहीं। ये बीमारी के टीके क्या हैं ?

मात्र बीमार होने की संभावना से बचने के उपाय ही तो हैं ये ?

क्या ये सभी बीमारियाँ हमें ही हो जातीं ?

तो फिर यह सब किसलिये ?

दुनियां के करोड़ों लोगों में से एक व्यक्ति आतंकवादी हो सकता है, उस एक से उत्पन्न खतरे की सम्भावना निर्मूल करने के लिये प्रतिदिन दुनियाभर के करोड़ों लोगों को कठोर सुरक्षा जाँच से गुजरना पड़ता है।

जाहिर है कि अपने हितों के प्रति तथा उन हितों पर होने वाले संभावित खतरों के प्रति कितने संवेदनशील हैं हम।

यदि ऐसा ही है तो क्यों नहीं हमें अपने निज भगवान आत्मा (मैं स्वयं) के भवभ्रमण का यह भयावह घोर संकट दिखाई नहीं देता है ?

क्यों नहीं हम इस संकट से बचने के उपाय करते हैं ?

यदि इस आत्मा के अनादि–अनंत होने की हमें तनिक भी संभावना दिखाई देती है, यदि निश्चित तौर पर यह साबित नहीं हो जाता है कि आत्मा नश्वर है, तो क्यों नहीं हम अपने इस भगवान आत्मा के कल्याण का उपक्रम करते हैं ?

(क्रमश:)

विधान एवं विद्वत् गोष्ठी का विशेष आयोजन

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ अष्टाह्निका महपर्व के अवसर पर दिनांक 18 से 25 नवम्बर तक मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका **(MONA)** द्वारा श्री नवीनभाई-सुशीलाबेन तेजानी यू.एस.ए. के सहयोग से चारों अनुयोगों के वीतरागता की सिद्धि विषय पर शिविर का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर **पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली** द्वारा चरणानुयोग के माध्यम से वीतरागता की पुष्टि, **पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया** द्वारा प्रथमानुयोग की अनेक कहानियों के माध्यम से पुण्य पाप के फल को प्रदर्शित करते हुये उससे वीतरागता की सिद्धि, **पण्डित चेतनभाई राजकोट** द्वारा समयसार की 320वीं गाथा के आधार से द्रव्यानुयोग के विषय को स्पष्ट किया गया तथा **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** द्वारा करणानुयोग के अन्तर्गत गुणस्थान, पंचपरावर्तन एवं ज्ञानावरणादि आठ कर्मों के माध्यम से वीतरागतारूप प्रयोजन की सिद्धि को बहुत मार्मिक ढंग से स्पष्ट किया गया। इस प्रसंग पर प्रतिदिन **ब्र. हेमचंदजी 'हेम'** के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

प्रतिदिन सायंकाल ज्ञानगोष्ठी के माध्यम से शंका समाधान का विशेष आयोजन समागत विद्वानों के सहयोग से किया जाता था। श्री किरीटभाई गोसलिया द्वारा कक्षा का भी लाभ मिला।

अष्टाह्निका के प्रसंग पर प्रात:काल पंचमेरु नंदीश्वर विधान का आयोजन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित दीपकजी धवल भोपाल एवं श्री अमृतभाई के सहयोग से किया गया।

कार्यक्रमों में लगभग 400 साधर्मियों के साथ-साथ विदेशों से पधारे लगभग 35-40 साधर्मियों ने तथा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विदेशों में बैठे हुये लोगों ने प्रत्यक्षवत् लाभ लिया। अन्त में देवलाली ट्रस्ट की ओर से श्री कांतिभाई मोटानी ने मोना का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के प्रमुख सहयोगी व संचालक श्री किरीटभाई गोसलिया रहे। संयोजन श्री रजनीभाई गोसलिया ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अमेरिका में रहकर किया।

बाल शिक्षण शिविर संपन्न

सोनगढ (गुज.) : यहाँ कहान शिशु विहार में दिनांक 26 से 29 नवम्बर तक बाल शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ एवं पण्डित सजलजी शास्त्री छिन्दवाड़ा की कक्षाओं का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। शिविर के निर्देशक पण्डित विरागजी शास्त्री थे।

अवश्य पधारिये *तपोभूमि पोन्नूर*

महामुनिराज आचार्य कुन्दकुन्द देव की तपोभूमि पोन्नूर मलै में आयोजित

आध्यात्मिक युवा शिक्षण शिविर

शनिवार, 20 फरवरी से गुरुवार, 25 फरवरी 2016

विद्वत् सान्निध्य : ❀ पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली ❀ डॉ. संजीवजी गोधा, जयपुर ❀ डॉ. मनीष शास्त्री, मेरठ

विशेष आकर्षण :- ◆आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूर एवं आसपास के अनेक प्राचीन जिनमंदिरों के दर्शन

◆सीमन्धर भगवान का मनोहारी दर्शन एवं पूजन विधान का मधुर आयोजन प्राकृतिक एवं शांत वातावरण में जिनवाणी की अमृत देशना

◆पूज्य गुरुदेवश्री के सीडी प्रवचन एवं उसके रहस्यों का लाभ ◆प्रोजेक्टर पर कक्षाओं का संचालन

संयोजक - विराग शास्त्री, जबलपुर मो. 9300642434 email: kahansandesh@gmail.com

कार्यक्रम स्थल : आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर, कुन्दकुन्द नगर, पोन्नूर मलै तह वन्देवासी, वडक्कमवाडी जि तिरुवण्णामलै 604505

निवेदक : श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले मुम्बई

विशेष : इस शिविर में सहभागिता करने के इच्छुक साधर्मी संयोजक से सम्पर्क करें। स्थान सीमित होने से सीमित साधर्मियों को पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा। कार्यक्रम 20 फरवरी को दोपहर से प्रारम्भ होगा।

पोन्नूर बैंगलोर से 360 किमी, पाण्डिचेरी से 88 किमी, वन्दवासी से 8 किमी, चेटपुट से 20 किमी की दूरी पर स्थित है।
चेन्नई के कोयम्बडु बस स्टेण्ड से पोन्नूर के लिये सरकारी बस क्रमांक 104, 130, 148, 208, 422 उपलब्ध रहती हैं।

पोन्नूर आवागमन के सम्बन्ध में आप निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें -

पोन्नूरमलै - 04183-291136, 321520, मो. 09976975074 चेन्नई सम्पर्क - श्री दीपक कामदार : 09383370033

दृष्टि का विषय

19 पाँचवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

प्रवचनसार की ९९वीं गाथा की आचार्य अमृतचन्द्रकृत तत्त्वप्रदीपिका नामक टीका में प्रदेशों की अखण्डता को वस्तु की समग्रता और परिणामों की अखण्डता को वृत्ति की समग्रता कहा है। तथा दोनों के व्यतिरेकों को क्रमश: प्रदेश और परिणाम कहकर प्रदेशों के क्रम का कारण अर्थात् विस्तारक्रम का कारण प्रदेशों का परस्पर व्यतिरेक है और प्रवाहक्रम का कारण परिणामों (पर्यायों) का परस्पर व्यतिरेक है – ऐसा कहा है।

उक्त तथ्य की गहराई में जाने से एक बात स्पष्ट होती है कि यदि विस्तारक्रम का कारण प्रदेशों का व्यतिरेक है और प्रवाहक्रम का कारण परिणामों का व्यतिरेक है तो प्रदेशों और परिणामों का अन्वय – अनुस्यूति से रचित विस्तार और प्रवाह; क्षेत्र और काल की समग्रता (अखण्डता) का कारण होना चाहिए। इसप्रकार यह सहज ही फलित होता है कि वस्तु की समग्रता क्षेत्र की अखण्डता है और वृत्ति की समग्रता काल की अखण्डता है। तात्पर्य यह है कि प्रदेशों में सर्वत्र परस्पर अनुस्यूति से रचित विस्तार ही क्षेत्र की अखण्डता है और पर्यायों में सर्वदा परस्पर अनुभूति से रचित प्रवाह ही काल की अखण्डता है।

इसप्रकार यह अत्यन्त स्पष्ट है कि प्रवाह की निरन्तरता को भी नित्यता कहते हैं, क्योंकि नित्यता और अनित्यता में काल की अपेक्षा ही मुख्य है। अत: नित्य का अर्थ, 'वस्तु की सदा उपस्थिति' मात्र इतना ही अभीष्ट नहीं है, अपितु इसमें प्रवाह की निरन्तरता भी सम्मिलित है। यह नित्यता ही काल की अखण्डता है, जो दृष्टि के विषयभूत द्रव्य का अभिन्न अंग है।

इसमें कहा गया है कि पर्यायें काल हैं और हमने **काल को दो भागों में विभाजित किया है, एक का नाम कालभेद और दूसरी का नाम काल-अभेद।**

जिसप्रकार हम किसी एक गुण को ग्रहण करते हैं तो वह गुणभेद कहलाता है और अनन्त गुणों को एक साथ अभेदरूप से ग्रहण करना, उसका नाम गुणों का अभेद है।

प्रदेशों में भी किसी एक प्रदेश को ग्रहण करना, उसका नाम प्रदेशभेद है और असंख्य प्रदेशों को एक साथ अभेदरूप से ग्रहण करना, वह प्रदेश-अभेद है।

उसीप्रकार काल तो अनादि-अनन्त है, उस काल में से एक खण्ड को ग्रहण करने का नाम, कालभेद है और काल की अखण्डता को ग्रहण करने का नाम काल-अभेद है। यह जो त्रिकाली कहा जाता है, वह काल का अभेद ही है।

'त्रिकाली' का अर्थ तीन काल नहीं है, अपितु तीनों कालों के अभेद का नाम त्रिकाली है।

यदि किसी से पूछा जाय कि पर्याय नित्य है कि अनित्य तो सभी कह देंगे कि अनित्य है। अब मैं आपसे फिर पूछता हूँ कि जब पर्याय अनादि काल से अनन्तकाल तक विद्यमान रहती है, तब आप कैसे कह सकते हैं कि पर्याय अनित्य है? इसके उत्तर में आप ऐसा भी कह सकते हैं कि वे पर्यायें तो नई-नई आ रही हैं; क्योंकि वे प्रतिसमय बदल रही हैं।

जिसप्रकार बहते हुए पानी को नदी कहा जाता है, यदि वह पानी बह नहीं रहा है तो वह झील हो सकता है, समुद्र हो सकता है, तालाब हो सकता है, बांध हो सकता है, कुंआ हो सकता है, लेकिन वह नदी नहीं हो सकता है। **बहते हुए पानी का नाम नदी है। जो नित्य बहे, उसका नाम नदी है, जो कभी-कभी बहे, उसका नाम नदी नहीं है।**

जैसे नदी का 'बहना' **अनित्यता** है, वैसे ही नदी का हमेशा बहते रहना नदी की **'नित्यता'** है।

उसीप्रकार जो द्रव्य है, वह परिणमनशील भी है और अपरिणामी भी है।

अरे भाई ! वह परिणमन अनादिकाल से अनंतकाल तक एक समय भी नहीं रुकता है; इसलिए वह परिणमन नित्य ही है अर्थात् उसकी अनित्यता भी नित्य ही है।

यहाँ अनित्य का अर्थ ऐसा है जो 'कभी हो' और 'कभी न भी हो' और नित्य का अर्थ है जो 'सदा हो।'

इसके लिए मैं 'गंगा' नदी का उदाहरण देता हूँ; क्योंकि अन्य नदियाँ तो कभी-कभी बहना बन्द कर देती हैं; लेकिन गंगा नदी कभी नहीं रुकती। जब बरसात होती है, तब बरसात के पानी से गंगा बहती है, सर्दी के दिनों में भी वह प्रवाह सूखता नहीं है और गर्मियों में बर्फ पिघलती है तो उस बर्फ के पानी से गंगा बहती है, इसप्रकार गंगा नदी का प्रवाह एक समय भी अवरुद्ध नहीं होता है।

इसीप्रकार द्रव्य का प्रवाह भी अनादिकाल से लेकर अनंतकाल तक एक समय भी अवरुद्ध नहीं होता है; इसीलिए तो

हम ऐसा कहते हैं –

भगवान ! आपकी नित्यता तो नित्य है ही, आपकी अनित्यता भी नित्य है अर्थात् आपकी नित्यता तो अनन्त है ही, आपकी अनित्यता भी अनन्त है।

'अनित्यता के अनन्त' का तात्पर्य यह है कि उस अनित्यता का कभी अंत नहीं आएगा।

अब यदि कोई पूछे कि वह अनित्यता मोक्ष जाने पर भी रहेगी कि नहीं ? ये अनित्यता जैसे अभी प्रतिसमय बदल रही है तो मोक्ष जाने पर प्रतिसमय बदलेगी या नहीं ? अर्थात् सिद्ध होने पर नित्य बदलेगी कि नहीं ?

अरे भाई ! यद्यपि प्रतिसमय बदलना अनित्यता है, लेकिन ये उसका नित्य स्वभाव है, अनित्य स्वभाव नहीं है। यह अनित्यता तो वस्तु के स्वरूप में ही है।

आत्मा में जो एक अनित्य नाम का धर्म है, वह अनित्य नहीं है, अपितु नित्य ही है। नित्य धर्म के समान अनित्य धर्म भी नित्य ही है।

जैसे आत्मा में ज्ञान, दर्शन, सुख आदि गुण नित्य हैं। वैसे ही अनित्य नाम का धर्म भी नित्य है।

इसप्रकार अनित्य नाम का धर्म भी नित्य होने से दृष्टि के विषय में शामिल है। इसप्रकार अनित्यधर्म और नित्यधर्म – इनकी अखण्डता दृष्टि के विषय में शामिल है।

यदि उस अनित्य धर्म में नित्यत्व नहीं घटता तो वह दृष्टि के विषय में शामिल नहीं हो सकता था; लेकिन अनित्य धर्म में नित्यत्व घटित होता है; इसलिए 'अनित्य' धर्म भी दृष्टि के विषय में शामिल है।

यद्यपि यह विषय बहुत सरल है और बहुत सहज भी है; लेकिन राई की ओट में पहाड़ के समान कठिन है। यदि हम इस विषय को बिल्कुल खुले दिमाग से समझने का प्रयास करेंगे, तो ही यह विषय हमारी समझ में आयेगा।

'सातवीं गाथा में दृष्टि के विषय में पर्याय का निषेध किया है' – ऐसा सुनकर कई लोग कहते हैं कि आप तो हमें यह बता दो कि दृष्टि के विषय में पर्याय शामिल है या नहीं ?

अरे भाई ! इसका जवाब इतना सहज नहीं है। यह एक सैकेण्ड का काम नहीं है। इस विषय का समझना आकुलता में नहीं हो सकता। कहा भी जाता है कि **यह धीरों का काम है, उतावलियों का काम नहीं है।** इस विषय पर अभी बहुत विचार करने की आवश्यकता है।

इसीप्रकार कई लोग कहते हैं कि 'समयसार अनुशीलन' की जरूरत नहीं है। वे समयसार अनुशीलन को बिना पढ़े ही कह देते हैं कि समयसार अनुशीलन की आवश्यकता नहीं है।

अरे ! मुझे इस विषय को (दृष्टि का विषय) समयसार अनुशीलन में लिखे हुए आठ साल हो गए हैं, लेकिन किसी को कुछ पता ही नहीं है। बहुत कम लोगों को यह बात ख्याल में है। ऐसा देखकर मुझे ऐसा लगता है कि समयसार अनुशीलन के अनुशीलन की भी आवश्यकता है।

'न द्रव्येण खण्डयामि, न क्षेत्रेण खण्डयामि, न कालेन खण्डयामि, न भावेन खण्डयामि' – यह कथन जब बोला जाता है तो लोग समझते हैं कि 'यह तो मंत्र है, बस बोलने की चीज है। जैसे – पूजन में 'छिन्द–छिन्द, भिन्द–भिन्द' बोला जाता है, वैसे ही प्रतिक्रमण में **'न द्रव्येण खण्डयामि, न क्षेत्रेण खण्डयामि.....'** यह तो बोला जाता है। ये तो बोलने की चीजें हैं, इन्हें समझने की क्या जरूरत है ?

इसीप्रकार लोगों ने 'णमोकार मंत्र' के बारे में भी धारणा बना रखी है कि 'णमोकार मंत्र' तो बोलने की चीज है, उसे समझने की क्या जरूरत है।

(क्रमशः)

तीर्थयात्रा का लाभ लें

श्री वीर कुन्दकुन्द कहान तत्त्वप्रभावना समिति द्वारा संचालित सन्मति संस्कार संस्थान, कोटा द्वारा दिनांक 21 से 27 दिसम्बर तक सेसई, खनियांधाना, गोलाकोट, चंदेरी, खंदारगिरि, थूवोनजी, ललितपुर (क्षेत्रपालजी), देवगढ, बानपुर, आहारजी, पपौराजी, द्रोणगिरि, नैनागिरि, पटनागंज (रहली), पटेरियाजी (गढाकोटा), कुण्डलपुर, पवाजी, करगुंवाजी आदि बुंदेलखण्ड तीर्थों की यात्रा निकाली जा रही है। इसमें पूजन, विधान, प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का लाभ मिलेगा। बस में यात्रा के समय भी भक्ति, प्रश्नोत्तर एवं प्रवचन का लाभ मिलेगा। यात्रा प्रस्थान 21 दिसम्बर प्रातः 10 बजे हिन्दू धर्मशाला कोटा से तथा कोटा आगमन 28 दिसम्बर प्रातः 9 बजे तक होगा। **प्रतिव्यक्ति राशि –** 8 हजार रुपये (सिटिंग), 10 हजार रुपये (स्लीपर)। **संपर्क सूत्र :–** 09414178701, 09414310096, 09413109096, 08766052597; यात्रा फार्म भरने हेतु वेबसाइट–

http://www.sanmatisanskar sansthan.com

नोट :- (1) अब आप हमारी वेबसाइट से आदरणीय युगलजी, डॉ. भारिल्ल व ब्र. सुमतप्रकाशजी के प्रवचनों को सुन व डाउनलोड कर सकते हैं। (2) संस्थान की गतिविधियाँ देखने के लिये आप हमारे यूट्यूब चैनल sanmati sanskar sansthan पर भी subscribe कर सकते हैं। (3) यात्रा शुल्क निम्न अकाउन्ट में जमा करायें – नाम – श्री वीर कुन्दकुन्द कहान तत्त्व प्रभावना समिति, बैंक का नाम– सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, Account No. 00000003290021185;
IFSC code - cbin0284525; PAN no - AAQTS1736H

आगामी कार्यक्रम...

देवलाली-नासिक (महा.) में दिनांक 13 से 17 फरवरी 2016 तक डॉ. उज्ज्वला शहा द्वारा प्रतिदिन 6-6 घंटे 'सम्यग्ज्ञानचंद्रिका कर्मकाण्ड भाग 1' पर कक्षाओं का लाभ मिलेगा। आपके आने की पूर्व सूचना देवलाली/मुम्बई ऑफिस में अवश्य दें। आवास व भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी। सभी साधर्मीजन 'सम्यग्ज्ञानचंद्रिका कर्मकाण्ड भाग 1 ग्रंथ अपने साथ लावें। **संपर्क सूत्र -** वीतराग वाणी प्रकाशक, 157/9, निर्मला निवास, सायन (पूर्व), मुम्बई-400022, फोन - 022-24073581; पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर, लाम रोड, देवलाली, जिला-नासिक, 422401 (महा.), फोन - 0253-2491044

शोक समाचार

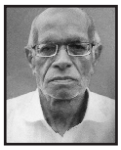

(1) जयपुर (राज.) निवासी श्री शिखरचंदजी राजधरलालजी जैन का दिनांक 13 नवम्बर को 72 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप टोडरमल स्मारक की दैनिक स्वाध्याय सभा के श्रोता थे एवं स्मारक की सभी गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लेते थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्यरत्न' के पिताजी थे। आपकी प्रेरणा से ही डॉ. दीपकजी टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययन हेतु आये थे। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) गुढाचन्द्रजी (राज.) निवासी श्री रामकिशनजी जैन का दिनांक 27 नवम्बर को 87 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। आपने अपने तीन पुत्रों डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी मुम्बई तथा पौत्र चिन्मय शास्त्री को शास्त्री विद्वान बनाया एवं दो पौत्र दुर्लभ व चेतनप्रकाश टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययनरत हैं। पुत्रियों व पौत्रियों को भी आध्यात्मिक संस्कार प्रदान किये एवं उनका विवाह भी तत्त्वज्ञान से समृद्ध परिवारों में ही किया।

ज्ञातव्य है कि आपका जन्म अजैन परिवार में हुआ था तथा 17 वर्ष की आयु में आपको वीतरागी संस्कार प्राप्त हुये। जिसके बाद आपका पूरा जीवन परिवर्तित हो गया। आपके प्रयत्नों से आज आपके गांव में 70 से भी अधिक मुमुक्षु भाई-बहिन सतत् तत्त्वाभ्यास करते हैं। टोडरमल स्मारक द्वारा संचालित कार्यक्रमों का आप भरपूर लाभ लेते थे। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को ज्ञानदान स्वरूप 11 हजार रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

आध्यात्मिक संगोष्ठी संपन्न

मौ (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 14 से 16 नवम्बर तक त्रिदिवसीय आध्यात्मिक संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' द्वारा दोनों समय नियमसार की गाथा 43 पर एवं पण्डित सुरेशचंदजी द्वारा नियमसार, द्रव्य-गुण-पर्याय व मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

इसके अतिरिक्त तीन गोष्ठियों का भी आयोजन हुआ, जिनमें प्रथम व द्वितीय गोष्ठी दीपावली विषय पर एवं तृतीय गोष्ठी सम्यग्दर्शन विषय पर हुई। इन गोष्ठियों में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के वर्तमान अध्ययनरत छात्रों ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस अवसर पर ब्र. रवीन्द्रजी का उद्बोधन भी हुआ।

महावीर संदेश संस्कार शिक्षण शिविर संपन्न

हीरापुर (म.प्र.) : यहाँ भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर बच्चों एवं युवाओं को धार्मिक संस्कार देने हेतु दिनांक 8 से 15 नवम्बर तक आवासीय शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर दोपहर में भगवान शांतिनाथ व पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन तथा सायंकाल अनेक स्नातक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

इस शिविर में हीरापुर, तिगौड़ा, मड़देवरा, अमरमऊ आदि स्थानों के लगभग 280-300 बच्चों ने लाभ लिया। अनेक बालकों ने पटाखे न फोड़ने की प्रतिज्ञा ली।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

25 से 30 दिसम्बर	गढाकोटा (म.प्र.)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
30 व 31 जन.2016	भोपाल (दीवानगंज)	वेदी शिलान्यास
11 से 17 फरवरी	गुना (म.प्र.)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
22 से 24 फरवरी	उदयपुर (राज.)	वेदी प्रतिष्ठा
26 से 28 फरवरी	जयपुर	वार्षिकोत्सव

प्रकाशन तिथि : 28 नवम्बर 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127